किताबें मिलीं

मनोज मोहन

आज के प्रश्न के तेईसवें सिलसिले को अरुण कुमार त्रिपाठी ने *संकट में खेती : आंदोलन पर किसान* शीर्षक से आगे बढ़ाया है. अरुण कुमार त्रिपाठी लोहिया-विचार से जुड़े रहे हैं. इस संपादित किताब में किसानों के संकट पर बाईस लोगों ने विचार किया है जिनमें अधिकांश अपने राजनीतिक रुझान के कारण समाचारों के परिसर में जाने-पहचाने जाते हैं. इस तरह की संपादित किताबों पर तात्कालिकता हावी रहती है. सभी लेखकों ने गूगल के डेटा पर ही भरोसा किया है, हमें यह स्वीकार करना चाहिए कि हम अभी भी वैकल्पिक डेटा प्रणाली विकसित नहीं कर पाए हैं। यह किताब किसानों से संबंधित विवरण पाने का एक ज़रिया है लेकिन खेती का संकट न तो इन तीन क़ानूनों से आया था और न ही उसके हटने से जाने वाला है। खेती के संकट पर निरंतर संवाद की ज़रूरत सभी लेखकों ने महसूस की है और नये विकल्पों की तलाश की ज़रूरत भी।

संकट में खेतीः आंदोलन पर किसान
सं. अरुण कुमार त्रिपाठी
वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नयी दिल्ली
मूल्य : ₹ 325, पृष्ठ : 240

प्रेमचंद के बाद फणीश्वरनाथ रेणु आधुनिक हिंदी गद्य के दूसरे ऐसे लेखक हैं, जिनके लिखे साहित्य को भारतीय समाज की रूढ़ियों में जो बदलाव आ रहे थे, उसके संकेतक चिह्न के तौर पर देखे जाने चाहिए। उन्हीं रेणु पर अनंत ने अपनी किताब *दो गुलफ़ामों की तीसरी कसम* को बड़े श्रम, शोध और गहरे लगाव से लिखा है। तीसरी कसम कहानी का बीज रेणु को कब, कहाँ और कैसे मिला, उसके किरदार किन वास्तविक व्यक्तियों पर आधारित थे, उनके चरित्र, उनकी कहानियाँ रेणु को कैसे और कहाँ मिली, और इसके साथ ये कहानी शैलेंद्र तक कैसे पहुँची और उनकी क्या प्रतिक्रिया थी, इस पर किताब में सारे विवरण जुटाए गए हैं। यह कहना सही होगा कि दो गुलफ़ामों की तीसरी कसम में रेणु ने जिन कमज़ोर और मेहनतकशों की आर्थिक मजबूरी के साथ-साथ उनकी नैतिकता तथा सांस्कृतिक हार्दिकता को रेखांकित किया है, अनंत ने उस हार्दिकता को विस्तार दिया है।

दो गुलफ़ामों की तीसरी क़सम
अनंत
कीकट प्रकाशन, कुरथौल, पटना–804453
मूल्य : ₹ 650, पृष्ठ : 240
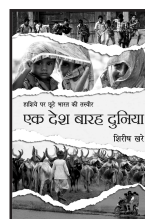
शिरीष खरे अपनी किताब *एक देश बारह दुनिया* में हाशिए पर छूटे भारत की तस्वीर पेश करते हैं। इस किताब में बारह रिपोर्ताज़ हैं। सारे रिपोर्ताज़ हाशिए पर रह गए उन समुदायों के क़िस्से हैं जिन्हें कभी विकास, कभी आधुनिकता तो कभी परिवर्तन के नाम पर ठगा गया है। 2008 से 2017 के बीच के बारह रिपोर्ताज़ों में महाराष्ट्र से छह, छत्तीसगढ़ से तीन और मध्य प्रदेश, राजस्थान और गुजरात से एक-एक रिपोर्ताज़ यहाँ प्रस्तुत हैं। बायतु, राजस्थान की यात्रा में पत्रकार शिरीष खरे यह दर्ज करने पर मजबूर होते हैं कि गणतंत्र की स्थापना के सात दशकों के बाद भी जन सामान्य यह नहीं मान

पाता कि सभी नागरिक एक समान हैं। दिखाई यह पड़ता है कि जनतंत्र का सार 'एक मनुष्य, एक मूल्य' के सिद्धांत पर टिका है, क्योंकि यह हिंसा, अन्याय और घृणा के बूते अपना राज्य क़ायम रखना चाहता है। इस किताब का निष्कर्ष है कि हाशिए का समाज अभी भी सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक संकटों से जूझ ही रहा है।

एक देश बारह दुनिया
शिरीष खरे
राजपाल, दिल्ली-110006
मूल्य : ₹ 295, पृष्ठ : 208

सुषमा नैथानी ऑरेगन स्टेट यूनिवर्सिटी, कोरवालिस, अमेरिका में वनस्पति विज्ञान की एसोसिएट प्रोफेसर हैं। *अन्न कहाँ से आता है* किताब कृषि के इतिहास की चर्चा तो करती ही है, साथ ही कृषि के विकास पर अभी तक की अपडेटेड, जीवंत और रोचक जानकारी देती है। कृषि मानव सभ्यता का पहला उद्यम माना जाता है। भारत जैसे कृषि प्रधान देश में आधी आबादी कृषि पर ही निर्भर है, और देश के राष्ट्रीय आय का चौथाई हिस्सा भी कृषि पर ही निर्भर है। संग्रहण से लेकर कृषि की शुरुआत, विभिन्न समाजों में उनका विकास और जी एम फसलों तक के बारे में यहाँ बात की गई है। वो मानती हैं कि पूरी दुनिया में अभी भी टिकाऊ कृषि के मॉडल को उभरने में वक़्त लगेगा। इस किताब में कृषि से जुड़े अंग्रेज़ी और हिंदुस्तानी ज़ुबान में शामिल शब्दों को तरजीह दिया गया है। कृषि ने मानव सभ्यता की बहुविध संस्कृतियों को जन्म दिया है, और आज भी उसका संबंध उलझा हुआ भले दिखे लेकिन अंतरंग और अंतरगुंफित संबंध बना हुआ है।

अन्न कहाँ से आता है
सुषमा नैथानी
नैशनल पुस्तक न्यास, भारत
मूल्यः ₹ 275, पृष्ठः 262.

साहित्य के इतिहास में मल्लिका भारतेंदु हरिश्चंद्र की प्रेयसी के रूप में दर्ज है। डॉ. राजकुमार के संपादन में *मल्लिका समग्र* किताब में भारतेंदु के जीवन में उनकी उपस्थिति बौद्धिक सहचर के रूप में दिखाई पड़ती है। हिंदी-संसार के पुरुष केंद्रित साहित्यिक-सांस्कृतिक इतिहास को सही परिप्रेक्ष्य में समझने के ख़ातिर भी मल्लिका के साहित्यिक योगदान का सम्यक मूल्यांकन ज़रूरी है। *मल्लिका समग्र* द्वारा न सिर्फ़ उन्नीसवीं सदी के कथित नवजागरण की कहानी पूरी होती है बल्कि भारतेंदु हरिश्चंद्र की भी। बीच-बीच में हम इतिहास के उन पन्नों से भी गुज़रते हैं जहाँ पुरुष केंद्रित साहित्यिक-सांस्कृतिक इतिहास की समझ भी दुरुस्त होती है। इस समग्र ने मल्लिका की छवि और कृति दोनों को ही प्रामाणिकता के साथ पाठकों के समक्ष रखा है।

मल्लिका समग्र
संपादकः डॉ. राजकुमार
राजकमल पेपरबैक्स, नयी दिल्ली
मूल्यः ₹ 299, पृष्ठः 262
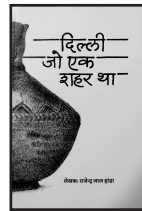
'दिल वो नगर नहीं कि फ़िर
आबाद हो सके।
पछताओगे सुनो हो
ये बस्ती उजाड़ के'।

मीर की इन पंक्तियों की रौशनी में जब हम *दिल्ली जो एक शहर था* का वक़्त और आज के वर्तमान समय की दिल्ली को देखते हैं तो एक निरंतरता का अहसास होता है। जनवरी 1951 में प्रकाशित राजेन्द्र लाल हांडा की इस उर्दू पुस्तक का हिंदी अनुवाद शुभम मिश्र ने हाल ही में किया है। इसे गुरु गोविंद सिंह ट्राइसेंटिनरी विश्वविद्यालय ने प्रकाशित किया है। पुस्तक में राजेंद्र लाल हांडा के बारे में कोई परिचय नहीं है, जो है वो इस किताब की तफ़सील में है। वह भी उनके बारे में ज़रा सी जानकारी दो-तीन जगहों पर है, लेकिन हमें सन् 1940 से 1950 तक के समय की अहम जानकारी मिलती है। इसी समय में दिल्ली एक साम्राज्यवादी शासन के केंद्र से निकलकर एक महान स्वतंत्र राष्ट्र की राजधानी बनी। उस समय जो

अकल्पनीय परिवर्तन दुनिया भर में हुए, उसका असर हमारे देश पर भी पड़ा था, और उसकी गहरी छाप आज की दिल्ली पर भी है।

दिल्ली जो एक शहर था
राजेंद्र लाल हांडा
अनुवादः शुभम मिश्र
गोविंद सिंह ट्राइसेंटिनरी विश्वविद्यालय
मूल्यः ₹ 799, पृष्ठः 148.

रामकुमार कला-मर्मज्ञ प्रयाग शुक्ल की किताब *रामकुमार : कला कथा* उनके लेखों का संग्रह है, जिसमें यह महत्त्वपूर्ण पंक्ति भी शामिल है, जब अमूर्तन के चितेरे रामकुमार ने कहा था कि 'लाल रंग भी उदास हो सकता है।' उनके बनाए चित्रों में रंग निर्लिप्त भाव से चले आते हैं। इस पुस्तक में शामिल लेखों की खूबी यह है कि प्रयागजी ने ये सारे लेख रामकुमार के चित्र बनाने की यात्रा के समानांतर किया है। रामकुमार के सम्मान में उनके लिखे वे दोनों लेख शामिल हैं जो बनारस को लेकर लिखे गए थे। प्रयागजी का कहना है कि वे 'आधुनिकता' के अतिरेक में कभी बहे नहीं। उन्होंने सचमुच अपनी तरफ़ से, अपनी रचनात्मक शर्तों पर ही अपनी 'आधुनिकता' का आविष्कार किया। चित्रकार रामकुमार को जानने की एक ज़रूरी किताब है।

रामकुमारः कला कथा
प्रयाग शुक्ल
इंडिया टेलिंग, धनबाद, झारखंड
मूल्यः ₹ 300, पृष्ठः 160
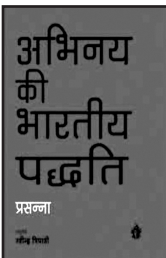
आधुनिक कन्नड़ थिएटर के अग्रदूत और राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय (रानावि) के स्नातक प्रसन्ना प्रमुख रंगमंच निर्देशक और नाटककार हैं। वे *अभिनय की भारतीय पद्धति* किताब में अभिनय की समकालीन पश्चिमी पद्धति के बरअक्स समकालीन भारतीय पद्धति का विवेचन करते हैं। उनकी इच्छा रही है कि अभिनय की भारतीय पद्धतियाँ भी समकालीन रंगमंच के सिलसिले में विवेचित हों, न कि सिर्फ़ भारतीय शास्त्रीय नाट्य सिद्धांतों के परिप्रेक्ष्य में ही हों। भारतीय रंगमंच की एक लंबी शास्त्रीय परंपरा रही है, उसी के आलोक में अभिनय की भारतीय पद्धति की खोज़ करने में सफल रहे हैं। कन्नड़ के इंप्रोवाइज अंग्रेज़ी संस्करण का हिंदी अनुवाद रवींद्र त्रिपाठी ने किया है।

अभिनय की भारतीय पद्धति
प्रसन्ना
अनुवादः रवींद्र त्रिपाठी
राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, बहावलपुर हाउस, नई दिल्ली
मूल्यः ₹ 400, पृष्ठः 298
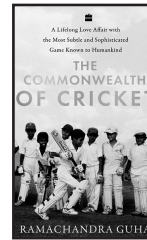
मशहूर इतिहासकार रामचंद्र गुहा की रुचि समाज, राजनीति, पर्यावरण और क्रिकेट में है। हार्पर कॉलिंस से प्रकाशित किताब *द कॉमनवेल्थ ऑफ़ क्रिकेट* में उन्होंने जबसे अपने जीवन में क्रिकेट की बारीकियों को देखना शुरू किया, उसका वर्णन किया है। साठ के दशक के पूर्वार्द्ध तक भारत क्रिकेट की दुनिया में हाशिये पर ही था, उस समय तक भारत ने विदेशी भूमि पर कोई टेस्ट मैच नहीं जीता था। उसके पचास साल बाद जब गुहा क्रिकेट कंट्रोल ऑफ़ बोर्ड में शामिल हुए तो भारत क्रिकेट का विश्व विजेता बन चुका था। वे स्कूली, क्लब, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर खेले क्रिकेट में कैसे स्थानीय हीरो से लोकल हीरो और फिर अंतर-राष्ट्रीय स्तर पर आइकन बनते हैं, इसका जीवंत वर्णन किया है। इस किताब में क्रिकेट से जुड़े संस्मरण को, छोटे-छोटे विवरण को रिपोर्ताज शैली में पढ़ना उन क्षणों को फिर से जीवंत महसूस करना है।

द कॉमनवेल्थ ऑफ़ क्रिकेट
रामचंद्र गुहा
फोर्थ इस्टेट हार्पर एंड कॉलिंस, नई दिल्ली
मूल्यः ₹ 699, पृष्ठः 350
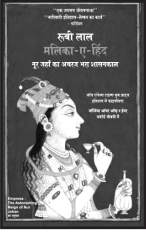
रूबी लाल इतिहास पढ़ाती हैं। मुगलों के शासनकाल में नूर जहाँ को पहली महत्त्वपूर्ण महिला के रूप में वे इस किताब में ज़िक्र करती हैं, जिनका उस समय के शासन में दख़ल है। नूर जहाँ के व्यक्तित्व में ऐसा क्या था जो वह शीर्ष पर पहुँची और जहाँगीर का साथ सह-शासक की हैसियत हासिल कीं–इसकी इतनी गहन प्रस्तुति अन्यत्र दुर्लभ है। यह किताब इस मिथ को भी ग़लत साबित करता है कि मुगलों के यहाँ स्त्रियों की स्थिति अच्छी नहीं है, यहाँ तक कि उसकी राजनीतिक सूझबूझ, कूटनीतिक कुशलता और सौंदर्यानुभूति का प्रभाव शाहजहाँ तक पर देखा जाता है। वह राज्यादेशों पर हस्ताक्षर किया करती थी और उसके नाम से शाही सिक्के ढलते थे। इतिहास की दृष्टि से नूर जहाँ की यह पहली प्रामाणिक जीवनी मानी जा सकती है।

मलिका-ए-हिंद : नूर जहाँ का अचरज भरा शासनकाल
रूबी लाल
संवाद प्रकाशन, मेरठ, उत्तर प्रदेश
मूल्यः ₹ 400, पृष्ठः 280
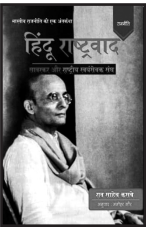
भारतीय राजनीति की एक अंतर्कथा को निष्पक्ष नज़रिये से *हिंदू राष्ट्रवाद : सावरकर और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ* एक ऐसी किताब है जो भारतीय राजनीति की अंतर्कथा को निष्पक्ष और स्पष्ट नज़रिए से राव साहेब कसबे ने लिखा है। यह मूल रूप से मराठी में लिखा गया है। यह किताब सावरकर के विरोधाभासी व्यक्तित्व के पीछे की गुत्थियों को सुलझाती है। मुस्लिम विरोधी छवि में क़ैद उनके समाज-सुधारक रूप की अनदेखी की जाती है। गोडसे के बानबे पेज की हस्तलिखित बयान को जिस तरह भरी अदालत में पढ़कर सच की विश्वसनीयता को संदिग्ध करने की कोशिश की गई थी, और आज के प्रचार माध्यमों से उस संदिग्धता को पुख्ते तथ्यों में बदलने की कोशिश की जा रही है, यह किताब उसका खंडन करती है। हिंदू राष्ट्रवाद के समर्थक सावरकर के चिंतनशील मस्तिष्क का प्रामाणिक विश्लेषण लेखक ने किया है। मनोहर गौर के सुघड़ अनुवाद में यह एक ज़रूरी किताब है, जिसे अमृत महोत्सव वर्ष में पढ़ना ज़रूरी है।

हिंदू राष्ट्रवादः सावरकर और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ
राव साहेब कसबे
अनुवाद : मनोहर गौर
संवाद प्रकाशन, मुंबई : मेरठ
मूल्यः ₹ 450, पृष्ठः 568

एकांत के सौ वर्ष लातिन अमेरिका का इतिहास नहीं है, वह लातिन अमेरिका का एक रूपक है। यह कवि-दृष्टि है, जिससे मंगलेश डबराल आजीवन अपने आसपास को देखते रहे। *एक दिन आयोवा* के गद्य लेखक और कवि की *सिर्फ़ यही थी मेरी उम्मीद,* उसका अंतिम संग्रह है, वह कोविड से कवि की तरह लड़ते हुए दुनिया को अलविदा कह चुका है। इस संग्रह में शामिल करने के लिए उन्होंने कुल तैंतीस लेख चुने थे। अधिकतर लेख कवि, कविता और कविता की दुनिया के बारे में है। उनका मानना है कि शायद ही कोई संवेदना है, कोई मानवीय आवेग और सघनता और गहराई और विचलित करनेवाली कोई वैचारिक भावना, जो किसी अभिव्यक्ति को कवि बना देती है। तभी अशोक वाजपेयी भूमिका में कह देते हैं कि मंगलेश का गद्य 'शायद बिजली से वंचित' नहीं, बल्कि बिजली गिरने के ठीक पड़ोस का गद्य है जिसमें असाधारण स्पंदन और द्युति है।

सिर्फ़ यही थी मेरी उम्मीद
मंगलेश डबराल
वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली-110 002
मूल्यः ₹ 695, पृष्ठः 304